(5)

(1)

Discuss in brief the main contribution of Behaviouristic school of Psychology with special reference to Watson in the field of history of Psy.

Ans:- मनोविज्ञान के इतिहास में व्यवहारवाद का जन्म संरचनावाद तथा प्रकार्यवाद के सिद्धान्तों के विरोध में हुआ। प्रारंभ में मात्र पशुओं के व्यवहार के अध्ययन का विषय माना जाता था लेकिन कुछ प्रमुख पशु मनोवैज्ञानिक जैसे Thorndike, Cattell, ~~एन्जेल~~ आदि व्यवहारवादियों की श्रेणी में नहीं आते हैं। अतः व्यवहारवाद को एक निश्चित और सचेतन संप्रदाय कहा जा सकता है।

Watson व्यवहारवाद के जन्मदाता थे। 1903 ई० में इन्होंने शिकागो विश्वविद्यालय से Ph.D की उपाधि प्राप्त की तथा 1908 ई० में हॉपकिंस विश्वविद्यालय में प्रोफेसर का पद ग्रहण किया। यह कहना गलत नहीं होगा कि व्यवहारवाद उस मनोविज्ञान के विरुद्ध है जिसके अध्ययन का विषय मात्र चेतना थी। Watson ने इस धारणा को चुनौती दी कि जो चीज अदृश्य है, जिसे स्पर्श नहीं की जा सकती है उसपर किसी भी प्रकार का वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालना पूर्णतः असंभव है। Watson को हमेशा यह बात खटकती थी कि पशु मनोविज्ञान अस्पष्ट है। यह भावना ही उन्हें इस ओर आकृष्ट किया। रचनात्मक मनोविज्ञान पशु मनोविज्ञान को गौण समझते थे लेकिन दूसरी ओर पशु मनोविज्ञान के ज्ञाता instinct and learning के क्षेत्र में काफी महत्त्वपूर्ण परिणाम निकाल रहे थे। फलतः Watson ने भी स्वेच्छा से विरोधी पक्ष को ही अपनाया। 1914 ई० में इन्होंने एक पुस्तक प्रकाशित की जिसका नाम 'Behaviour' रखा। इस पुस्तक में इन्होंने अपने व्यवहारवाद के विचारों को स्पष्ट रूप से रखा है। इसका प्रभाव नई पीढ़ी के मनोवैज्ञानिकों पर काफी गहरा पड़ा। Watson के विचारों में क्या नवीनता, मौलिकता तथा प्रगतिशीलता है

Scanned with CamScanner

इसे सर्वप्रथम अध्ययन कर लेना आवश्यक है।

(1) Watson ने मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान न कहकर व्यवहार का मनोविज्ञान कहा है।

(2) Watson ने मानव तथा पशु के व्यवहार के अध्ययन कर मनोविज्ञान के क्षेत्र को काफी व्यापक बना दिया है। Darwin के अनुसार मानव की उत्पत्ति पशुओं से हुई है फलतः पशुओं के व्यवहार के अध्ययन के आधार पर मानवव्यवहार की व्याख्या आसानी से की जा सकती है।

(3) Watson ने मनोविज्ञान के आलोच्य विषय के अध्ययन के लिए अन्तर्निरीक्षण विधि की जगह वस्तुनिष्ठ वाह्य निरीक्षण विधि का प्रयोग किया है जो अधिक वैज्ञानिक है।

(4) Watson के अनुसार मनोविज्ञान को संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, भाव, संवेग आदि आत्मगत चीजों का उपयोग न कर उत्तेजना-प्रतिक्रिया, शिक्षण-आदत आदि का प्रयोग करना चाहिए जो प्राणी के व्यवहार से संबंधित है।

(5) ~~Watson के~~ Watson के पूर्व देकार्ट द्वारा मन और शरीर के अंतः प्रतिक्रिया मनोवैज्ञानिकों के समक्ष एक व्यर्थ रहस्यपूर्ण समस्या पैदा कर दिया था क्योंकि इन्होंने मन या आत्मा के स्थान पर मस्तिष्क का प्रयोग किया था जिसका व्यवहार में कोई स्थान नहीं है।

* व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने इसके जगह पर Peripheral organs, sensory organs, Muscles तथा glands पर विशेष जोर दिया है। Woodworth ने अपनी पुस्तक में एक सूची प्रकाशित की जिसे व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक नहीं मानते हैं। Watson ने Wundt, Cattle, Mc-Dougal आदि के विचारों का विरोध किया है।

लेकिन अब प्रश्न यह उठता है कि Watson ने किन-किन आधारों पर अन्तर्निरीक्षण का विरोध किया है। इसका पहला कारण यह है कि Titchener इसके जन्मदाता थे जिन्होंने इस विधि को ही मनोविज्ञान का सबसे प्रमुख विधि माना था जिसके द्वारा पशु व्यवहार का अध्ययन

करना संभव नहीं था इसका दूसरा कारण यह है कि Watson को इस विधि के प्रमाणिकता पर संदेह था Titchener के अनुसार सिर्फ प्रशिक्षित लोग ही इस विधि का प्रयोग कर सकते थे जिसे मानने के लिए Watson तैयार नहीं था Watson ने imageless thought (प्रतिमाहीन विचार) की कटु आलोचना की क्योंकि यह मनोविज्ञान को विज्ञान बनाने के विवाद का विषय बन गया था इन आलोचनाओं के अति-रिक्त एक गंभीर आलोचना यह है कि Watson वैसे वस्तुओं के साथ अपना संबंध रखना चाहते थे जिसे स्पर्श तथा देखा जा सकता था Watson का कथन है कि जिस प्रकार रसायन में test tube में रखी हुई चीजों को दूसरे को दिखाया जा सकता है, ठीक उसी प्रकार वे अपने प्रयोग-शाला में वैसी वस्तुओं को रखना चाहते थे जिसका वस्तुनिष्ठ निरीक्षण किया जा सके। यह सत्य है कि कुछ क्रियाएं ऐसी होती है जिसे नहीं देखा जा सकता है जैसे:- [illegible] अन्तरांग की क्रिया, ग्रंथियों का स्राव, मांसपेशियों का संकुचन, स्नायुप्रवाह का संचालन इत्यादि, ऐसी क्रियाओं को Watson ने आंतरिक व्यवहार की संज्ञा दी है।

समानान्तरवादियों का कथन है कि प्राणी के अंदर दो प्रकार की प्रणालियाँ साथ-साथ काम करती है जिसे क्रमशः मानसिक तथा शारीरिक प्रणाली कहा जाता है लेकिन व्यवहारवादी सिर्फ व्यवहार को ही मानते है चाहे वह आंतरिक हो या वाह्य। यह सत्य है कि व्यवहारवाद ने अंतर्दर्शन के विरुद्ध आवाज उठाकर मनोवैज्ञानिक वातावरण को बिल्कुल अनुकूल बना दिया था लेकिन अंत में इसका भी पतन हुआ। अन्तर्निरीक्षण भले ही सही न हो लेकिन यह मनोविज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण विधि है क्योंकि Watson ने भी अपने विधि में मौखिक रिपोर्ट का उपयोग किया है। Woodworth के अनुसार व्यवहारवाद की देन कोई खास महत्त्व नहीं रखता है क्योंकि वस्तुनिष्ठ विधि का उपयोग मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक

मनोवैज्ञानिकों द्वारा पहले ही की जा चुकी थी संरचनावाद के समर्थकों ने वातावरण को मनोविज्ञान के क्षेत्र से निकाल कर चेतना की प्रधानता दी है। Angell ने प्रकार्यवाद में व्यवहार के महत्त्व को स्वीकार किया है लेकिन प्राणी को नहीं साथ-ही-साथ इन्होंने इस संबंध में कोई सूत्र निर्धारित नहीं किया है कि प्राणी के व्यवहार का अध्ययन वातावरण में किस प्रकार किया जा सकता है। Watson ने मानव अध्ययन को छोड़कर पशु अध्ययन पर विशेष जोर दिया तथा इन्होंने स्पष्टतः कहा है कि जबतक वातावरण का समुचित अध्ययन नहीं होगा तबतक प्राणी का अध्ययन समुचित रूप से करना संभव नहीं है।

CONCEPTS OF WATSON (वॉटसन के सिद्धांत)

व्यवहारवाद अथवा WATSON के योगदानों को हम निम्न बिन्दुओं के आधार पर वर्णित करते हैं →

Watson का Productive theory कार्य सफल नहीं हुआ क्योंकि विश्वयुद्ध प्रारंभ हो जाने के कारण इन्होंने शिक्षा संबंधी कार्य छोड़कर क्रियात्मक मनोविज्ञान के कार्य में लग गये। अतः पशु मनोविज्ञान और बाल मनोविज्ञान के क्षेत्र में उनकी देन काफी महत्त्वपूर्ण मानी जाने लगी। 1914 ई० में Watson की पहली पुस्तक "The behaviour" प्रकाशित हुई जिसमें व्यवहारिक मनोविज्ञान की पद्धति की चर्चा की गई है। पुनः 1919 ई० में उनकी दूसरी पुस्तक "Psychology from the stand point of behaviourist" प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने मानव प्राणी तथा उसके सभी क्रियाओं की व्याख्या की गई। 1925 ई० में उनकी तीसरी पुस्तक "Behaviourism" प्रकाशित हुई जिससे यह सिद्ध होता है कि Watson की खोज मनोविज्ञान को पूर्णतः क्रियात्मक बना देना था।

(1) Stimulus-response (उत्तेजना-प्रतिक्रिया) :- Watson ने कहा है कि प्राणी का व्यवहार जटिल होता है जिसका विश्लेषण Simple Stimulus तथा Response की इकाइयों में किया जा सकता है। मूलप्रवृत्ति तथा आदत (Instinct and habit) Watson के अनुसार प्राणी के सहज क्रिया (Reflex-

Scanned with CamScanner

action) से बनाती है। इस कारण गेस्टाल्टवादियों ने Watson को Atomonist कहकर बदनाम किया।

(2) Sensation and Perception (संवेदना और प्रत्यक्षीकरण) :- Watson ने संवेदना को नहीं माना है क्योंकि यह आत्मगत होती है। Watson के अनुसार किसी उत्तेजना के प्रति किए गए प्रतिक्रिया को ही जाना जा सकता है चाहे वह दृष्टि संबंधी हो या श्रवण संबंधी। प्रत्यक्षीकरण को इन्होंने ज्ञानवाही स्नायु का कार्य माना है जो उत्तेजना को ग्रहण कर मस्तिष्क में भेज देता है। स्नायुप्रवाह ग्राहक से आकर क्रियात्मक केन्द्र (Motor centre) में भेज दिया जाता है जिसके फलस्वरूप प्राणी प्रतिक्रिया करता है।

(3) Memory and Image (स्मरण और प्रतिमा) :- Watson का ऐसा विश्वास था कि सभी व्यवहार sensory-motor होता। है मस्तिष्क दोनों को जोड़कर ज्ञानवाही अवयव और मांसपेशियों में संबंध स्थापित कर देता है। यदि कोई क्रिया सिर्फ मस्तिष्क से होती तो उसे व्यवहार नहीं कहा जाता क्योंकि व्यवहार Peripheral (बाह्य) होता है न कि मस्तिष्क। Watson के इस कथन की आलोचना इस आधार पर की गई है कि स्मृति प्रतिमाएं संवेदना से मिलती जुलती होती है क्योंकि यह किसी उत्तेजना से उत्पन्न नहीं होती है इसकी उत्पत्ति मस्तिष्क से होती है जिसे अन्तर्निरीक्षण द्वारा अध्ययन किया जा सकता है न कि व्यवहारवादियों के निरीक्षण द्वारा। अतः हम कह सकते हैं कि Watson ने यह सिर्फ दिखलाने की कोशिश की है कि स्मृति प्रतिमाएं वास्तव में sensory-motor क्रिया है।

(4) Feeling and Emotion (भाव और संवेग) :- Watson ने इसकी व्याख्या भी sensory-motor क्रिया के आधार पर की है लेकिन feeling के अपेक्षा संवेग अधिक जटिल होती है। संवेग में हृदय की धड़कन, श्वास-प्रश्वास की क्रिया तथा मांसपेशियों में तनाव हो जाता है। James-Lange ने अपने सिद्धान्त में प्राणी के शारीरिक

क्रिया को ही प्रधानता दी है। Watson ने संवेग को Hereditary pattern Reaction (आनुवंशिकता संघात प्रतिक्रिया) कहा है। Watson के अनुसार बच्चों में भय-क्रोध और प्रेम तीन प्रकार के संवेग पाए जाते हैं तथा अन्य संवेगात्मक क्रियाएं अर्जित होते हैं।

(5) Theory of learning (शिक्षण सिद्धांत):- इस संबन्ध में Watson ने Thorndike के अभ्यास का नियम तथा प्रभाव का नियम की चर्चा की है। सफल प्रतिक्रिया को व्यक्ति बार-बार करता है फलतः वह आत्मसात कर लिए जाते हैं। दूसरी ओर असफल प्रतिक्रिया करने से असंतुष्टि मिलती है जिसे वह छोड़ देता है। प्रभाव के नियम में चेतनात्मक अनुभूति होती है। इस कारण Watson ने इसे अस्वीकार किया है तथा सिर्फ अभ्यास के नियम (Law of exercise) पर ही विशेष जोर दिया है। इन्होंने Pavlov के Law of reinforcement को भी अस्वीकार किया है। अतः हम कह सकते हैं कि Watson का शिक्षण सिद्धान्त प्राचीन साहचर्यवाद से संबंधित है।

(6) Theory of thought (विचार का सिद्धांत):- Watson ने विचार को आंतरिक व्यवहार की संज्ञा देते हुए इसे भी sensory-motor व्यवहार कहा है। Watson के अनुसार आंतरिक वाणी गतियाँ (Implicit speech movement) विचार के लिए व्यवहार का काम करती है। बच्चे जिन वस्तुओं से खेलते हैं साथ ही साथ उसका नाम भी लेते हैं फलतः वे धीरे-धीरे प्रौढ़ की तरह विचार करने लगते हैं। Woodworth ने Watson के विचार सिद्धांत (Theory of thought) को तर्कपूर्ण कहा है क्योंकि ऐसे कई प्रमाण हैं कि व्यक्ति विचार के साथ-साथ स्वयं अपने आप से बातचीत भी करता है। अतः Watson की मूकवाणी की धारणा बिल्कुल ही नवीन है। [1920 ई० में Watson ने आनुवंशिकता की अपेक्षा वातावरण पर ही विशेष जोर दिया है। (7) a
यही कारण है कि इन्होंने स्पष्टतः यह कहा है कि यदि

Scanned with CamScanner

मुझे कोई नवजात शिशु दे दिया जाए तो मैं उसे जो भी चाहूँ बना सकता हूँ। Watson के इस कथन से यह सिद्ध हो जाता है कि इन्होंने व्यक्तित्व विकास पर वातावरण के प्रभाव को ही अधिक प्रधानता दी है। 1924-25 के बीच Watson ने व्यवहारवाद को एक प्रायोगिक विज्ञान कहा है जिसका एकमात्र क्षेत्र मानवीय व्यवहार है जिसका अध्ययन प्रयोगात्मक विधियों के द्वारा किया जा सकता है। Watson का यह विचार वस्तुतः मनोविज्ञान को काल्पनिक, धार्मिक तथा नैतिक विचारों से अलग कर प्रयोगात्मक वैज्ञानिकता की ओर अग्रसर किया है। अतः Watson का 'Behaviourism' पुस्तक बैदिक इतिहास में युगान्तरकारी कहा जा सकता है।

Watson के विचार एवं सिद्धांतों की आलोचना भी की गई है। (i) Woodworth ने Watson के कथन को मात्र खोजपूर्ण तथा परम्परा के विरुद्ध कहा है क्योंकि उस समय संरचनावाद काफी उन्नति कर चुका था और प्रकार्यवाद एक पद्धति के रूप में विकसित हो रहा था। (ii) Watson की अभिरुचि पशु मनोविज्ञान की ओर थी। इस कारण वे चेतना की विश्लेषणात्मक अध्ययन अन्तर्निरीक्षण के द्वारा करना पसंद नहीं करते थे। (iii) इन्होंने चेतना, मन, प्रतिमा आदि के महत्त्व को नहीं माना है क्योंकि ये मानसिक दर्शन से आए हैं। (iv) Watson ने उत्तेजना-प्रतिक्रिया के आधार व्यवहारिक कार्यों की व्याख्या पर की है। Watson ने मनोविज्ञान को गतिशील बनाने पर विशेष जोर दिया है क्योंकि इसके अभाव में मनोविज्ञान की उन्नति नहीं हो सकती है। अतः निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि Watson ने मन और शरीर की समस्या को बड़ी आसानी से हल किया है। यही कारण है कि आज भी कई मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि Watson ने चेतना के मनोविज्ञान की जगह व्यवहार को मान्यता देकर अमेरिका के मनोविज्ञान के साथ बड़ा उपकार किया है।

— X — X — X — X —